केवल निजी वितरण के लिए

ECHOES
INDIA

श्री राम चंद्र मिशन®

जनवरी २०१४ खंड ७, अंक १

मणपाक्कम, ३१ दिसम्बर २०१३ से १ जनवरी २०१४

क्रिसमस के बाद, गुरुदेव को थोड़ा बुखार हो गया था जोकि डॉक्टर्स के लिए एक चिन्ता का विषय था। हालाकि ३० दिसम्बर की शाम तक उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। चेन्नई और आसपास के केन्द्रों से लगभग ८ हजार अभ्यासी नए बर्ष के लिए एकत्रित हो चुके थे। डोर्मिटरी के छज्जों पर और क्रीड़ा स्थलों पर अभ्यासियों के रहने की अतिरिक्त व्यवस्था की गई थी। नए वर्ष के अवसर पर बच्चों ने ध्यानकक्ष में एक नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसे गुरुदेव सीधे प्रसारण के द्वार टी.वी. पर देखा।

एक जनवरी को ध्यानकक्ष और छज्जे सब फुल थे। किसी को ये उम्मीद नही थी कि गुरुदेव सत्संग के लिए आएगें लेकिन ये सबके लिए आश्चर्य और आनंद का विषय था कि गुरुदेव ध्यानकक्ष मे आए। यह सबके लिए हर्ष की घड़ी थी कि जब वे सबको नए बर्ष की शुभकामनाए देते गुए पधारे। यह वास्तव मे गुरुदेव की तरफ से एक उपहार था। सत्संग एक घन्टे तक चला और इसके बाद अभ्यासी गायकों के द्वारा ३ भजन गाए गए। बाद में गुरुदेव हमेशा की तरह साफ और ऊर्जायुक्त आवाज़ में बोले।

उन्होंने कहा कि इस बात का कोई महत्व नही है कि कौन कितने वर्षों से ध्यान कर रहा है क्योंकि यह कहा गया है कि पूर्व के संतों ने हजारों सालों तक ध्यान किया था। लेकिन बाबूजी ने कहा है कि सहजमार्ग में लक्ष्य को एक ही जीवन में प्राप्त किया जा सकता है।

"इसलिए कम से कम अब आपको जाग जाना चाहिए, अपने हृदय की सारी नफ़रत को, और दूसरे मानवों को तिरसक्रत करने की भावना को और दूसरों के बारे मे पूर्वधारणाओं को निकाल फेंको। स्नो व्हाईट में रानी की तरह अपने आपको दर्पण में देखो कि आप क्या हो। उसके लिए नफ़रत बढ़ती गई और उसने स्नो व्हाईट को तोड़ना चाहा। लेकिन हमारे लिए, जैसे–जैसे हम अपने को ज्यादा दर्पण मे देखते जातें हैं, सत्यपूर्ण आंखों से, अपने को जानने की जरूरत के लिए अपने को देखने के लिए, मै अपने आप का मूल्यांकन करने में सक्षम होता जाता हूँ और विकास की सीढ़ी पर क्रमसे वढ़ता जाता हूँ। अंत में उन्होनें कहा कि मेरे पास आपके लिए दो संदेश हैं। एक है कि "समय बर्बाद मत करो", और दूसरा यह कि "उसे प्रेम करो जो सबको प्रेम करता है"।

गुरुदेव बाद मे बाहर आकर धूप में बैठ गए और ओमेगा के ११वीं और १२वीं कक्षा के बच्चों से मिले। गुरुदेव ने उनके साथ बात करते हुए, हरेक को इस विशेष दिन की शुभकामनाएं देते हुए काफी समय व्यतीत किया।

भारत मे जोन्स/ छेत्रों का पुनर्गठन

पूज्य गुरुदेव ने भारत मे मिशन की जोन्स का पुनर्गठन कर दिया है जोकि एक जनवरी २०१४ से प्रभावी है। नक्शे में नये जोन्स दिखाए गए हैं और नीचे दी गई तालिका में नये जोन्स तथा उनके जोनल–इन– चार्ज (छेत्रीय प्रभारी) के विवरण दिए गए हैं।

जोन	जोन का नाम	जोन इन चार्ज	प्रस्तावित ईमेल आईडी
1	हैदराबाद मैट्रो	श्री उल्हास राव कुम्बले (हैदराबाद)	zic.ap1@srcm.org
1A	उत्तर आंध्र प्र.	श्री मधुसूदनराव कोथपल्लि (हैदराबाद)	zic.ap1a@srcm.org
1B	उत्तर तटवर्ती आंध्र प्र.	श्री आदिनारायण मोगंती (विशाखापट्नम)	zic.ap1b@srcm.org
1C	दक्षिण तटवर्ती आंध्र प्र.	श्री एम आर गन्नाधर (नेल्लौर)	zic.ap1c@srcm.org
1D	दक्षिण आंध्र प्र.	श्री गन्नाधर डोन्टिअरेड्डि (हैदराबाद)	zic.ap1d@srcm.org
2	चैनई मेट्रो	कैप. विनीत सिंग रनावत (चैनई)	zic.tn2@srcm.org
2A	उत्तर तमिलनाडु	श्री बी एस मुरुगन (होसुर)	zic.tn2a@srcm.org
2B	पूर्व तमिलनाडु	श्री टी एस रघुराम (तिरुचरापल्लि)	zic.tn2b@srcm.org
2C	पश्चिम तमिलनाडु	श्री टी वी विश्वनाथ राव (तिरुप्पुर)	zic.tn2c@srcm.org
2D	दक्षिण तमिलनाडु	श्री रामनाथन रामचन्द्र (मदुरई)	zic.tn2d@srcm.org

continued..

भारत मे जोन्स/ छेत्रों का पुनर्गठन (contd..)

जोन	जोन का नाम	जोन इन चार्ज	प्रस्तावित ईमेल आईडी
3A	दक्षिण केरल	श्री के यू मोहन (थिरुसूर)	zic.kl3a@srcm.org
3B	उत्तर केरल	श्री ए के मोहनदास (पालक्काड)	zic.kl3b@srcm.org
4	बेंगलोर मैट्रो	श्री गिरीश टोटलूर (बेंगलोर)	zic.ka4@srcm.org
4A	उत्तर कर्नाटक	श्री गजेन्द्र सिंह (गुलबर्गा)	zic.ka4a@srcm.org
4B	दक्षिण कर्नाटक	श्री मधुसूधन क्रिष्नास्वामी (मैसूर)	zic.ka4b@srcm.org
4C	तटवर्ती कर्नाटक	श्री सुब्रया पाई (विटल)	zic.ka4c@srcm.org
5	मुम्बई मैट्रो	श्री तुषार प्रधान (मुम्बई)	zic.mh5@srcm.org
5A	पश्चिम महाराष्ट्र	श्री सुभाष वैद्य (पुना)	zic.mh5a@srcm.org
5B	केन्द्रीय महाराष्ट्र	श्री अरुन कुमार चौहान (औरंगाबाद)	zic.mh5b@srcm.org
5C	महाराष्ट्र विधर्ब	श्री राजेन्द्र रेथिनम (पुलगॉवं)	zic.mh5c@srcm.org
6A	उत्तर गुजरात	श्री राजेश अग्रवाल (अहमदाबाद)	zic.gj6a@srcm.org
6B	दक्षिण गुजरात	श्री डॉ सुरेन्द्र आर अग्रवाल (सूरत)	zic.gj6b@srcm.org
7A	पश्चिम राजस्थान	श्री विकास मोघे (जोधपुर)	zic.rj7a@srcm.org
7B	पूर्व राजस्थान	श्री मधुकर कोचर (जयपुर)	zic.rj7b@srcm.org
8A	पश्चिम मध्य प्रदेश	श्री नवीन मिश्रा (उज्जैन)	zic.mp8a@srcm.org
8B	पूर्व मध्य प्रदेश	मेज.जन. (रिट.) आनन्द नरायन मुद्रे (जबलपुर)	zic.mp8b@srcm.org
9	नई दिल्ली मैट्रो	श्री सुधीर मार्वहा (नई दिल्ली)	zic.dl9@srcm.org
10	पन्जाब	मेज. जन. (रिट.) हरभजन सिंह (चंडीगढ़)	zic.pb10@srcm.org
11A	जम्मू एंड काश्मीर	श्री सुरेन्द्र शर्मा (जम्मू)	zic.hpjk11@srcm.org
11B	हिमाचल प्रदेश	श्री सुरेन्द्र शर्मा (जम्मू)	zic.hpjk11@srcm.org
12A	पश्चिम यू पी	श्री अशोक कुमार गर्ग (मेरठ)	zic.up12a@srcm.org
12B	यू पी शाहजानपुर	श्री प्रभात कुमार सिंहा (बांके गंज)	zic.up12b@srcm.org
12C	यू पी लखनऊ	श्री अशीष कुमार सिंह (कानपुर)	zic.up12c@srcm.org
12D	यू पी इलाहाबाद	श्री अशीष कुमार सिंह (कानपुर)	zic.up12d@srcm.org
12E	पूर्व यू पी	श्री अवधेश सिंह (गोरखपुर)	zic.up12e@srcm.org
13	पश्चिम बंगाल	श्री अजय कुमार भट्टर (कोलकता)	zic.wb13@srcm.org
14	उडीसा	श्री गन्धर्ब बेहर (भुवनेश्वर)	zic.or14@srcm.org
15	अरुनाचाल प्रदेश, पूर्व असम, नागालैंड	श्री ईश्वर प्रसाद (तिनसुकिया)	zic.arnl15@srcm.org
16	मेघालाय, पश्चिम असम, तिरुपुरा, मनिपुर, मिज़ोरम	श्री धनी चन्द (गुवहटी)	zic.as16@srcm.org
17	बिहार	श्री मनोज तिवारी (रांची/कोलकता)	zic.brjh17@srcm.org
18	उत्तराखंड	श्री भुपेन्द्र सिंह (अलमोड़ा),	zic.uk18@srcm.org
19	छत्तीसगढ़	श्री दीपक त्यागी (रायपुर)	zic.ct19@srcm.org
20	झारखंड	श्री मनोज तिवारी (रांची/कोलकता)	zic.brjh17@srcm.org
21	हरयाणा	श्री सत्य नरायन मन्डल (नई दिल्ली)	zic.hr21@srcm.org
22	सिक्किम, उत्तरी पश्चिम बंगाल	श्री रवीन्द्र तेलंग (गंगतोक)	zic.si22@srcm.org

अक्टूबर २०१३

चायनीज़ सेमिनार के समापन के पश्चात गुरुदेव स्वस्थ महसूस नहीं कर रहे थे और उनके लिये लोगों से मिलना कठिन हो रहा था। उनकी पैरों की तकलीफ जारी थी और उसमे सुधार का कोई लक्षण नही दिख रहा था। उन्होंने चलना बिल्कुल बन्द कर दिया था क्योंकि उनकी दोनो पाँवों की एड़ियों मे अभी भी दर्द था और चिकित्सकों ने उनसे अनुरोध किया कि वे अपनी टांगों को ऊपर रखें जिससे स्वास्थ्य सुधार मे सहायता मिले।

१२ अक्टूबर को नाश्ते और तिरूवेल्लूर भूमि योजना पर एक लम्बे विचार विमर्श के पश्चात गुरुदेव गोल्फ कार्ट मे लगभग ४५ मिनट के लिये आश्रम का दौरा करने के लिये गए। उन्हें ४ लोगों द्वारा सहायता किये जाने के बावज़ूद गोल्फ कार्ट मे बैठने मे काफी तकलीफ हुई।

गुरुदेव शाम को अपने शयनकक्ष के बाहर बैठते रहे हैं, कॉटेज के पीछे की तरफ क्योंकि यह उनके धूप में बैठने के लिये एक अच्छा स्थान है।

रविवार १३ अक्टूबर को गुरुदेव स्वस्थ महसूस नही कर रहे थे इसलिए भाई कमलेश ने सत्संग कराया और कुछ विवाह भी सम्पन्न कराए। यह दशहरे का सप्ताह था और आश्रम मे काफी अभ्यासी थे। गीता पर प्रश्नोत्तर सत्र कॉटेज के बड़े कक्ष में हुआ जिसका संचालन भाई चक्रपानी ने किया और भाई संस्कृत कानन ने प्रश्नों के उत्तर दिये जोकि गीता और सहजमार्ग पद्धति मे समानताओं को पहचानने की कोशिशों पर केन्द्रित थे। एक वार्तालाप के मध्य में गुरुदेव ने माईक उठा लिया और अपने कमरे के अन्दर से ही जहां से वे वार्तालाप सुन रहे थे, अपने विचार व्यक्त करने आरम्भ कर दिये। गुरुदेव की आवाज़ सुन कर सभी आश्चर्यचकित रह गए। गुरुदेव ने कहा कि "लक्ष्य तक पहुँचने का केवल निश्चित तरीका जिसे मै जानता हूँ और जिसका मैने पालन किया है, वह है सेवा।" सत्र के पश्चात समूह वितरित हो गया और गुरुदेव कॉटेज के कक्ष में आये और उन जोड़ों से जिनकी उसी सुबह शादी हुई थी और कुछ अन्य अभ्यासियों से जो वहाँ उपस्थित थे, मिले।

१६ अक्टूबर को उन्होंने आगामी प्रशिक्षक सेमिनार के विषय में विस्तृत विचार–विमर्श किया। वे न केवल प्रशिक्षक के कार्य बल्कि प्रशिक्षक के जीवन के विषय मे बातचीत कर रहे थे।

चीनी भाषा का पाठ

एक सुबह नाश्ते के बाद गुरुदेव काफी थके हुए थे और बिस्तर में लेटे हुए थे किन्तु सो नही सके। दो बहनों ने उनके लिए चीनी भाषा के पाठ का आयोजन किया और गुरुदेव को इस पाठ के दौरान तरोताज़ा और उत्साहित होते हुए देखा जा सकता था। इसके बाद वे कार्यालय में आये। जब उनसे यह पूछा गया कि कैसे उन्होंने भाषाओं के लिए इतनी रुचि विकसित की तो गुरुदेव ने कहा "देखिये, मैं लोगों से प्यार करता हूँ। इसलिए मैं उनके और उनकी संस्कृति के विषय में जानना चाहता हूँ और उनसे बातचीत करने की कोशिश करता हूँ और इसलिए मै भाषा सीखता हूँ।"

एक शाम को अभ्यासियों का एक बड़ा समूह कॉटेज के सामने एकत्रित हो गया था किन्तु काफी देर हो रही थी और गुरुदेव आराम कर रहे थे। उनके बाहर आने के आसार काफी कम थे। अचानक ७ बजे वे बाहर आये और सभी से मिले। वे हिन्दी मे बोले और कहा " मैं बहुत खुश हूँ कि आप सभी बहुत दूर से यहाँ इस आश्रम मे रहने के लिए आए हैं। कई अभ्यासी स्वयंसेवक बनकर मणपाक्कम मे कार्य करने के लिए आए हैं। मैं अभ्यासियों को सलाह दूँगा कि पहले वे अपने आश्रमों मे कार्य करे और उन्हे साफ –सुथरा रखें, वह आपका घर है कृपया उसे साफ रखें। आन्तरिक और बाहरी सफाई दोनो ही समान रुप से महत्वपूर्ण हैं।" प्यार के विषय मे बात करते हुए गुरुदेव ने एक उदाहरण दिया, " जिस दिन कृष्ण द्वारिका से जा रहे थे, राधा ने उनसे अकेले राधा के लिए बांसुरी बजाने के लिए कहा, इस पर कृष्ण ने उत्तर दिया, मै हमेशा ही केवल तुम्हारे लिए ही बांसुरी बजाता हूं किन्तु उसे हर कोई सुनता है"

रविवार, २० अक्टूबर

गीता सत्र के पश्चात गुरुदेव वीडियो लिंक के जरिए फ्रान्स मे नाइस के अभ्यासियों से वार्तालाप कर रहे थे। भाई पॉल जॉल ने सेमिनार के बारे मे बताया और बताया कि वह कितनी प्रभावी रही और गुरुदेव ने कहा, " मैं देख सकता हूँ कि ये सेमिनार आपको धीरे–धीरे आगे ले जा रही हैं।" उसके बाद उन्होंने कहा, " अब आप सभी को यही सब करने में दूसरों की सहायता करनी चाहिए। जैसा कि मैं सदैव कहता रहा हूँ, हम केवल अपने लिए ही विकसित नही होते, यह विकास की एक श्रंखला के समान है।" उन्होंने इस प्रकार के विकास को एक ब्रह्माण्डीय पेड़ की 'संज्ञा दी'।

इस ब्रह्माण्डीय वृक्ष में असंख्य पत्तियां, असंख्य शाखाएं और असंख्य टहनियाँ हैं फिर भी वे सब एक हैं। वे अलग-अलग नही हैं और वे सब वृक्ष के अंग हैं। "इसलिये, हमें समझना चाहिये कि हम केवल वह बना रहे है जिससे हम स्वयं बने हुये हैं।" इसके बाद उन्होंने इसकी तुलना पारस-पत्थर से यह कहते हुये की, 'मेरे मालिक ने कहा था कि एक पारस-पत्थर दूसरी वस्तुओं को केवल सोना बनाता है। मैं कोई ऐसी वस्तु चाहता हूँ जोकि एक पारस-पत्थर से दूसरा पारस-पत्थर बनाये। इस अर्थ में मेरे मालिक ने कहा था, 'मैं शिष्य नही बनाता हूँ, मैं मालिक बनाता हूँ।' प्रत्येक व्यक्ति मालिक नही बन सकता लेकिन प्रत्येक व्यक्ति मालिक के जैसा बन सकता है।" अन्त में उन्होंने कहा," मैं एक तरह से आप के साथ होने से खुश हूँ, लेकिन मैं बहुत ज्यादा खुश नही हूँ क्योंकि मैं दूसरी तरह से आपके साथ नही हो सकता हूँ।" इसके बाद गुरुदेव ने कहा," मैं वहीं हूँ। मेरा विश्वास कीजिये, मै अपने हृदय में आप सबके साथ हूँ।"

अपने स्वास्थ्य के बारे में बात करते हुये गुरुदेव ने कहा कि यद्दपि वे स्वस्थ महसूस नही कर रहे थे और देर से सोकर उठे थे लेकिन उन्होंने तैयार होने, नाश्ता करने और पहियेदार कुर्सी पर बैठने के लिये अपनी इच्छाशक्ति का उपयोग किया। गुरुदेव ने कहा," इसलिये आप मुझे अब उतना ही तरोताजा देख रहें है जैसा कि पहले देखते थे। अत: यदि मैं ऐसा कर सकता हूँ तो आप भी ऐसा कर सकते हैं। कोई बीमारी नही, थकान की कोई शिकायत नही। जब आप थके हैं, उठ जाइये। जब आप निराश हों, अपनी निराशा से बाहर आइये। यदि आप इसमें रहते हैं, यह एक खतरा है। इच्छाशक्ति से भौतिक कठिनाइयों पर काबू पाइये।

चेन्नई में वर्षा

२१ से २३ अक्टूबर तक बहुत भारी वर्षा हो रही थी और गुरुदेव को साँस लेने में कुछ कठिनाई हो रही थी। नाश्ते के बाद वे काफी अस्वस्थ थे और उन्हें ऑक्सीजन का सहारा लेना पड़ा। तीन समूहों से मुलाकात एक के बाद एक क्रमबद्ध थी और गुरुदेव ने सुझाव दिया कि वे उन सब से एक साथ मिल सकते हैं लेकिन वे लोग अलग-अलग समय पर आये। फ्राँस के अभ्यासी आये और उन्होंने फ्राँस के तीन आश्रम और मणपाक्कम में गुरुदेव के अभ्यासियों को सम्बोधित करने के लिये चौतरफा वीडिओ सम्मेलन के प्रस्ताव पर विचार-विमर्श किया।

इसके बाद गुरुदेव बाहर आये और उन्होंने प्रक्षिशण लेने वाले सहयोगियों को सम्बोधित किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि झूठी विनम्रता से बचना चाहिये और विनम्रता, उदारता और सादगी जैसे गुण एक अभ्यासी के स्वाभाविक अंग होने चाहिये और प्रत्येक को सहज मार्ग साधना के सभी पहलुओं का ध्यान रखना चाहिये। वार्ता के बाद गुरुदेव ने सिटिंग देने का निश्चय किया, तब तक सभी प्रशिक्षक प्रत्याशी भी आ गये थे और वे सब भी गुरुदेव के सामने बैठ गये। सिटिंग लगभग ३५ मिनट तक चली, जिसके बाद गुरुदेव लगभग बेदम हो गये थे।

प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

प्रशिक्षक बनने के लिये प्रत्याशियों का एक समूह दो सप्ताह की 'प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला' के लिये आया था। यह एक नयी पद्धति है, जहाँ विभिन्न केन्द्रों से प्रस्तावित प्रशिक्षक प्रत्याशी आते हैं और कार्यशाला में भाग लेते हैं, जिसके अंत में उन्हें प्रशिक्षक बनाया जाता है। दूसरे सप्ताह के दौरान बाइस प्रत्याशी गुरुदेव से मिलने गये। उन्होंने इस तथ्य पर बल दिया कि प्रशिक्षकों के लिये यह एक वचनबद्धता ही नही है बल्कि एक' औपचारिक समझौता' है कि वे सहजमार्ग के सिद्धान्तों का पालन करें और यह भी कि प्रशिक्षक सबसे पहले अभ्यासी हैं। उन्होंने पूछा कि कितने लोग नियमित अभ्यास कर रहे हैं। तत्पश्चात उन्होंने उन सभी को एक घंटे की लम्बी सिटिंग दी।

अभ्यासियों के साथ

गुरुदेव आजकल अक्सर अपने शयनकक्ष के पीछे की ओर धूप में बैठते हैं और नाश्ता करते हैं। एक सुबह वे बातचीत के मूड में थे

और उन्होंने कहा, "जब जीएसटी कार्यक्रम था, मुझे महसूस हो रहा था कि मुझे प्रत्येक बात से दूर रखा जा रहा है जो मिशन में घटित हो रही थी।

मुझे नहीं मालूम क्या हो रहा था, पर यह सब इस उद्देश्य से था कि ऐसे मामलों से मुझे परेशानी न हो। लेकिन मैं परेशान होना चाहता हूँ। मालिक ने यह भी कहा कि मैं अभ्यासियों से नियमित रूप से मिलना चाहता हूँ। "जब मैं इस शयनकक्ष में पूरे दिन बंद होता हूँ और मेरे आस-पास केवल डॉक्टर होते हैं तब मैं बहुत अकेला अनुभव करता हूँ।"

शाम को सत्संग के बाद गुरुदेव ने विदेशी अभ्यासियों को बुलवाया और कुटिया के बाहर उनसे मिले। लगभग ३० मिनिट तक सामान्य वार्तालाप चलता रहा। अचानक गुरुदेव चुप हो गये। यह पूर्ण शान्ति और मौन का समय था क्योंकि अभ्यासी भी मौन थे और ऐसा लग रहा था कि प्रकृति भी इसमें सहयोग कर रही थी क्योकि वहां १५ से २० मिनट तक पूर्ण शांति थी। फिर मालिक ने फ्रांस में मिशन के बारे में बातचीत करना आरंभ कर दिया।

नवंबर २०१३

कार्य समिति की बैठक

दिवाली से पहले की शाम को गुरुदेव की कुटिया पर मिशन की कार्य समिति की बैठक हुई। बैठक से पहले समिति के कुछ सदस्य गुरुदेव से उनके कार्यालय में मिले। भाई जैकी ने एक ऋषि के बारे में पूछा जिन्हें सीता के वनवास जाने का पूर्व ज्ञान हुआ था। क्या वे सीता का भविष्य बदलकर इस दुर्घटना को बदल नहीं सकते थे? गुरुदेव ने कहा "वे ऋषि ऐसा नहीं कर सकते थे यदि यह श्री राम की योजना नहीं होती। दूसरा, हम सभी कुछ संस्कारों के साथ नीचे आये हैं और हम भौतिक जीवन में जो हो रहा है उसे परिवर्तित नहीं कर सकते। जब हम विकास की बात करते है तो आध्यात्मिक विकास की बात करते है ,न कि शारीरिक विकास की, वह तो अपने आप होता है"। गुरुदेव ने कहना जारी रखा "राम को अंश अवतार कहा जाता है क्योंकि उन्हें अपने देवत्व का स्मरण नहीं था। भगवान कृष्ण को अपने देवत्व का स्मरण था अतः यह चेतना का विकास है और हमारी प्रार्थना भी हमारी चेतना के विकास के लिये होनी चाहिये।"

भाई कमलेश ने दो घन्टे चली कार्य समिति की बैठक की कार्यवाही का संचालन किया। अंत में उन्होने गुरुदेव का आदेश पढ़ा जिस के अनुसार प्रतिवर्ष समिति से एक तिहाई सदस्य सेवामुक्त होंगे और उनकी जगह पर नये सदस्य लिए जायेंगे। ठीक उसी समय गुरुदेव व्हीलचेयर में बाहर आये और समापन करते हुए कुछ टिप्पणियां की। फिर वे भोजन करने चले गये।

दिवाली उत्सव, २ से ३ नवंबर २०१३

दो दिन के सत्संग के लिये लगभग ५००० अभ्यासियों का बड़ा समूह उपस्थित था। योजनानुसार आयोजक इस बड़े समूह के प्रबन्धन के लिये पूरी तरह तैयार थे। शनिवार को गुरुदेव ने अभ्यासियों के एक बड़े समूह से अपने कक्ष में मुलाकात की। वे बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने हर एक का अभिवादन किया। दोनों दिन गुरुदेव ने सत्संग कराया और भाई कमलेश ने हाल ही में प्राप्त व्हिस्पर के संदेशों को पढ़कर सुनाया।

५ नवंबर को गुरुदेव ने वडकन्गुलम (सुदूर दक्षिण तमिलनाडु) से आये कुछ अभ्यासियों का स्वागत किया, जो उस आश्रम के कागज़ सौंपने आये थे जो बन चुका था और मिशन को भेंट किया जाना था।

८ तारीख को गुरुदेव ने भाई कमलेश के साथ आचारनीति और नैतिकता विषय पर चर्चा की। वे मिशन विरूद्ध जारी कई कानूनी मामलों के कारण चिंतित थे और उन्हें अपने उत्तराधिकारी के लिये नहीं छोड़ना चाहते थे।

ओमेगा के बच्चों के साथ

९ नवम्बर शनिवार को सायं गुरुदेव ओमेगा स्कूल के उन छात्रों से मिले जिन्होंने फुटबाल प्रतियोगिता जीती थी और जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता के अगले चक्र में भाग लेने जा रहे थे। उन्होंने उन सभी का अभिनन्दन किया और शुभकामना दी। उन्होंने छात्रों से कहा "तुम सभी को सिर्फ खेल–कूद के हित के लिए इसमें भाग लेना चाहिये। जीतना ही केवल मापदण्ड नहीं है। जब दो खेलते हैं तब एक को तो हारना ही होता है किन्तु खेल–भावना रखना सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।"

फ्रेन्च सेमिनार

१० नवम्बर रविवार को गुरुदेव तीन आश्रमों, नीस, मोन्टीपिलर और पेरिस के अभ्यासियों को एक साथ देखने में समर्थ हुए। वे प्रभावित

हुए और कहा कि आशा है कि भविष्य मे एक दिन ऐसा आएगा जब वे और अधिक संख्या में आश्रम देखने में सक्षम होंगे और सभी को एक साथ सम्बोधित कर सकेंगे। संक्षिप्त भाषण और सत्संग के पश्चात् सत्रावसान हुआ। सायंकाल को सभा भवन में कार्यक्रम निरंतर चलता रहा जहाँ भाई कमलेश ने तीन फ्रेन्च आश्रमों के अभ्यासियों को सम्बोधित किया। यह प्रश्नोत्तर–सत्र था तथा भाई कमलेश ने लगभग दस प्रश्नों के समूह के उत्तर दिये जिनमे काफी प्रश्नों का समावेश था।

भाई माधव के घर

गुरुदेव ११ से १८ नवम्बर तक भाई माधव के घर ठहरे थे जो कि आश्रम के ठीक पीछे स्थित है। गुरुदेव के लिए यह स्थान परिवर्तन था और यहाँ वे अत्यन्त प्रसन्न थे। दिनांक ११ को सायंकाल मे गुरुदेव के लिए एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। रशियन फेडरेशन के काउन्सल जनरल श्री निकोलय को भी कार्यक्रम में आमन्त्रित किया गया और गुरुदेव ने उनके अच्छे स्वागत किए जाने की ओर विशेष ध्यान दिया। एक रूसी कलाकार ने 'रशियन सिंगिंग बेल्स' प्रदर्शन किया जिसमे घंटियों एवं पीतल की विभिन्न आकार की बड़ी तश्तरियोँ द्वारा संगीत बजाया गया।

भाई माधव के घर रहते हुए गुरुदेव सुबह को अपना कार्य करते थे और उसके पश्चात् वहाँ उपस्थित कुछ अभ्यासियों को सिटिंग देते थे। सायंकाल विश्राम करने के पश्चात् गुरुदेव मुख्य रूप से अन्य केन्द्रों से बड़ी संख्या में आए अभ्यासियों को सिटिंग देते थे। वे अल्प समय के लिए उनसे मिलते थे और तत्पश्चात्

फिज़िओथेरेपिस्ट के साथ सत्र हेतु अपने शयन–कक्ष में चले जाते थे। गुरुदेव ने अति आवश्यक विश्राम करते हुए अभ्यासियों के साथ भी समय व्यतीत किया। वे १८ तारीख को आश्रम लौट आए।

दिनचर्या की ओर

शनिवार, ३० नवम्बर, २०१३: प्रात: गुरुदेव अपने कार्य और विचार –विमर्श में पूर्णरूप से व्यस्त थे। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि पुस्तकों का प्रकाशन एक समयान्तर पर हो जिससे अभ्यासियों पर ज़्यादा पुस्तकों को एक साथ क्रय करने का भार न पड़े।

इन सब का रुख़ आगामी वर्ष के उत्सव समारोह के बारे में चर्चा की ओर मुड़ा और पूज्य लालाजी तथा पूज्य बाबूजी दोनों के तिरुपुर में मनाए जाने वाले जन्म दिवस समारोहों के तथा बाद में तिरुवल्लुर में हाल ही में उपार्जित भूमि पर गुरुदेव के जन्म दिवस उत्सव मनाने के निर्णय की ओर ले गया।

यात्रा के लिए उत्कंठा

यह स्पष्ट है कि गुरुदेव पुन: यात्रा करने के लिए व्याकुल हैं। भाई कमलेश पटेल तथा अन्य लोगों के साथ बैठकों के दौरान उनकी

यह ललक (आकांक्षा) उभरती है। उन्होंने भाई कमलेश से कहा, "जब मैं तन्दुरुस्त हो जाऊँ तब तुम्हें और मुझे वडकंगुलम जाना चाहिए, मैं अभी स्वस्थ हूँ किन्तु मुझे छड़ी के सहारे और किसी का हाथ पकड़कर कुछेक कदम चल पाने के मेरे सामर्थ्य को फ़िर से पाना है– जो मुझमें मेरे बीमार पड़ने से पहले था।" उन्होंने यात्रा करने के विभिन्न तरीकों पर विचार किया और आख़िर में सड़क–यात्रा को चुना और इसके लिए मार्ग की रूपरेखा बनाई।

एक अन्य अवसर पर उन्होंने मिन्स्क का सफ़र करने की बात की। गुरुदेव ने उन लोगों के नाम गिनाए जो उनके साथ जाएँगे। उन्होंने कहा कि वे शाहजहाँपुर जाना भी पसन्द करेंगे किन्तु बिना घोषणा किए जाएँगे अन्यथा भीड़ को संभालना मुश्किल होगा।"

काम के लिए तड़प

यही उत्साह उन्हें ख़ुद पर लगातार काम लादने के लिए प्रेरित करता है। यह पूछे जाने पर कि क्यों वे बिना कार्यकर्ताओं को नियुक्त किए खुद एस्.एम्.एस्.एफ़्. के मामलों को संभाल रहे हैं, वे बोले, " मैं हरेक काम कर सकता हूँ। "उन्होंने आगे कहा,"मैं ज़िन्दा हूँ क्योंकि मैं काम कर रहा हूँ। बिना काम किए मैं पाँच वर्ष पहले ही गुज़र गया होता।"

गुरुदेव की नवीनतम परियोजना – तिरुवल्लुर

गुरुदेव ने भाई पी.आर.कृष्णा को तिरुवल्लुर की ज़मीन–ज़ायदाद (११३ एकड़) के निरीक्षण के लिए और जुलाई २०१४ के अपने जन्म दिवस उत्सव की सुव्यवस्था के लिए नियुक्त किया है। गुरुदेव एस्.एम्.एस्.एफ़्. के क्रिया–कलापों के लिए आवश्यक मूलभूत संरचना के विकास पर और साथ ही जहाँ पर्याप्त जल उपलब्ध है ऐसी उपजाऊ ज़मीन पर खेती–बाड़ी को जारी रखने के काम पर ध्यान दे रहे हैं।

सहज सन्देश क्रमांक: २०१३/५४

बुधवार, १८ दिसम्बर, २०१३

प्रिय भाइयों और बहनो,

इस वर्ष(२०१४) के लिए ३ प्रमुख समारोहों की योजना बनाई गई है; जैसे कि २ फरवरी को लालाजी महाराज का जन्म दिवस समारोह (४ दिन–१,२,३ और ४ फ़रवरी), बाबूजी महाराज का जन्म दिवस समारोह(२९,३० अप्रैल और १ मई) दोनों डी.जे. पार्क, तिरुपुर (भारत) में मनाए जा रहे हैं। वर्तमान अध्यक्ष का जन्म दिवस उत्सव २३,२४ और २५ जुलाई को चेन्नई (भारत) के पास स्थित तिरुवल्लुर में मनाया जाएगा। आखिर में उल्लेखित उत्सव हाल ही में ली गई तिरुवल्लुर की कृषि भूमि पर, जो रूपान्तरण की अवस्था में है, मनाया जाएगा।

मेरा सुझाव है कि भारी खर्चों के इन दिनों में अभ्यासी तीन उत्सवों में से किसी एक का चयन करें और जल्दी से जल्दी इसके लिए अपना नाम दर्ज़ कराएँ ताकि हमें पता चले कि हरेक उत्सव–स्थल के लिए कितने अभ्यासियों हेतू योजना बनानी है।

इससे अभ्यासियों को अपने परिवारों के साथ आने में सुविधा होगी जबकि तीनों उत्सवों में सम्मिलित होने के इच्छुक अभ्यासी अपने परिवारों को साथ लाने में भारी कठिनाई महसूस करेंगे। कृपया इस अनुरोध को गंभीरता से लें और जितनी जल्दी हो सके, किसी एक उत्सव के लिए नाम लिखाएँ।

इनमें से किसी भी उत्सव को आने में असमर्थ अभ्यासी अपने –अपने केन्द्रों में, वे जहाँ भी हैं, भाग ले सकते हैं। इन केन्द्रों में उत्सव केवल एक दिन के लिए मनाए जाएँगे, जैसे २ फ़रवरी, ३० अप्रैल और २४ जुलाई को।

हमेशा की तरह अभ्यासियों से विनती है कि यदि संभव हो तो भाग लेने अपने निकटतम आश्रम जाएँ। अन्यथा आज की आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए आपके अपने घरों में रहना बेहतर है।

सभी को आशीर्वाद।

पी. राजगोपालाचारी

नई नियुक्तियां

भाई पूरनमल भैंदा
आश्रम मैनेजर, जयपुर

प्रशिक्षक सभा

नए प्रशिक्षकों की कार्यशाला, मणपाक्कम

प्रशिक्षकों द्वारा दी जानेवाली सेवाओं की गुणवत्ता में और अधिक सुधार लाने के लिए गुरुदेव ने उनके प्रशिक्षण तथा तैयारी की एक नई प्रक्रिया प्रारम्भ की है। प्रत्याशी दो सप्ताह के एक ऐसे कार्यक्रम में भाग लेते हैं जो उन्हें उनके कार्य की गहराई से जानकारी, उसके प्रति वचनबद्धता तथा स्पष्टता प्रदान करता है। अक्टूबर और दिसम्बर में मणपाक्कम में २२–२२ प्रत्याशियों के दो समूहों ने यह प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन प्रत्याशियों को प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने की अनुमति भी प्राप्त हुई। ये प्रत्याशी देश के विभिन्न भागों से आए थे तथा इनमें से बहुत से प्रत्याशी उन केन्द्रों से आए थे जहाँ कोई भी प्रशिक्षक नहीं है। गुरुदेव ने स्वयं इन प्रत्याशियों से बातचीत की और उन्हें ध्यान कराया तथा उन्हें प्रशिक्षक के रूप में उनके आगे के जीवन के लिए तैयार किया।

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

२० से २४ नवम्बर तक लखनऊ के बाबूजी मेमोरियल आश्रम में 'प्रशिक्षकों के अनुभव को गहरा बनाना नामक' कार्यक्रम आयोजित किया गया। एन सी आर, उत्तराखंड, यू.पी. (पश्चिम) तथा यू.पी. (पूर्व) ज़ोन के ८८ प्रशिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में केवल वार्ताओं को सुनने से ज़्यादा ज़ोर आत्म –निरीक्षण तथा आपस में अनुभव बाँटने पर था। प्रतिभागियों को समझने तथा आत्म–निरीक्षण करने में सहायता के लिए गुरुदेव के द्वारा दी गई कई वार्ताएँ सुनाई गईं। इसका परिणाम प्रतिभागियों के चमकते चेहरों पर दिखाई दे रहा था। उन सबने सम्पूर्ण मानव, सच्चे अभ्यासी तथा उच्चतम प्रशिक्षक बनने का संकल्प किया।

सोनीपत, हरियाणा

१० नवम्बर, २०१३ को हरियाणा के सोनीपत आश्रम में १३ प्रशिक्षकों के लिए एक बैठक आयोजित की गई। ज़ोन–प्रभारी ने कई बिन्दुओं पर चर्चा करी जो भाई कमलेश और ज़ोन–प्रभारियों की बैठक के दौरान सामने लाए गए थे। यह बैठक दोपहर एक बजे तक चली तथा भोजन के उपरान्त सभी प्रशिक्षक लौट गए।

लुधियाना, पंजाब

१७ नवम्बर को पंजाब, चंडीगढ़, अम्बाला और मंडी डाबवाली के प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की गई। लगभग २० प्रशिक्षकों ने इसमें भाग लिया। ज़ोन–प्रभारी भाई मेजर–जनरल (रिटा.) हरभजन सिंह ने सभा की अध्यक्षता की। ज़ोन–प्रभारी ने उन विषयों पर ज़ोर दिया जिनसे इस ज़ोन के प्रशिक्षक तथा अभ्यासी सक्रिय तथा उत्साहित हो सकें। जिन बिन्दुओं पर चर्चा करी गई वे हैं – विभिन्न स्वयंसेवी कार्यों तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना, किताब पढ़ना, प्रशिक्षकों की मासिक बैठक, मिशन की गतिविधियों में बच्चों का भाग लेना तथा अपने आस–पड़ोस पर अपने विचार बाँटने के लिए अनौपचारिक बैठकों का आयोजन करना। ज़ोन–प्रभारी द्वारा दिए गए संदेश को प्रतिभागियों द्वारा बहुत अच्छी तरह ग्रहण किया गया।

पदाधिकारियों का भ्रमण

जोनल इन-चार्ज का दक्षिण तमिलनाडु का भ्रमण

१९ अक्टूबर को श्रीविल्लिपुत्थुर पहुंचने पर भाई एन.प्रकाश और भाई टी.वी. विश्वनाथराव ने अभ्यासियों के साथ मिलकर वृक्षारोपण किया। इसके बाद केन्द्र के विकास हेतु किये जाने वाले उपायों की चर्चा हुई। प्रशिक्षकों के एक दल के साथ वे कालासालिंगम विश्वविद्यालय गये और ७० एम बी ए के विद्यार्थियों के लिये एक खुला सत्र आयोजित किया। विश्वविद्यालय के कुलपति और रजिस्ट्रार ने इस प्रकार के सत्रों को अन्य कॉलेजों में भी करने का प्रस्ताव दिया और इच्छुक विद्यार्थियों के लिये सहज मार्ग पर एक पूरे सप्ताह के सेमिनार का भी प्रस्ताव दिया।

इसके बाद यह दल राजापालायम पहुंचा जहां सत्संग के बाद अनौपचारिक वार्ता हुई और फिर सभी रात्रि विश्राम के लिये विरुद्नगर आश्रम की ओर निकल गये। २० अक्टूबर को सुबह के सत्संग के बाद विरुद्नगर और अरुपुको-ई के अभ्यासियों के साथ आश्रम में वातावरण के संरक्षण पर केन्द्रित एक सभा आयोजित की गयी। सुबह लगभग ११ बजे भाई राव और भाई प्रकाश तिरुपुर के लिये चल दिये।

संयुक्त सचिव का दक्षिण तमिलनाडु का दौरा

२२ नवंबर को भाई ए.पी.दुरई ने मनामदुरई, सिवागंगाई और वेल्लुर केन्द्रों का दौरा किया जहां उन्होंने सत्संग संचालित किये और परस्पर संवादात्मक सत्रों में भाग लेकर अपने साधना संबंधित अनुभवों पर चर्चा करने के लिये अभ्यासियों का उत्साहवर्धन किया। २३ नवंबर को वे श्रीविल्लिपुत्थुर गये और सत्संग के बाद सहज मार्ग का अभ्यास करते समय धर्म, भाषा, जाति, पंथ, और संस्कृतियों से अपने आप को दूर रखने के विषय मे वार्ता दी। उन्होंने अभ्यासियों को सहज मार्ग और सतत स्मरण पर बोलने के लिये प्रोत्साहित किया। शाम ४ बजे वे पश्चिमी घाट की तलहटी के एक गांव, सेथुनारायणपुरम में २० प्रत्याशियों की उपस्थिती में एक खुला सत्र करने गये। वे पेरियार उपकेन्द्र के लिये निकले और बातचीत के सत्र और सत्संग के बाद मदुरई लौट गये।

२४ नवंबर को उन्होंनें मदुरई आश्रम में मदुरई और आसपास के केन्द्रों के ५६० अभ्यासियों के लिये सत्संग संचालित किया। वहां सुबह को समूहिक चर्चा तथा 'पिक एन्ड टाक' सत्र आयोजित किये गये। दोपहर को उन्होंने युवा सदस्यों से सहज मार्ग को आगे बढ़ाने की और अपने केन्द्रों को आगे बढ़ाने की अपनी योजना के बारे मे बोलने के लिए कहा। उन्होंने सत्संग के साथ पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का समापन किया।

भाई राजेश राठौर का कर्नाटक का दौरा

भाई राजेश राठौर ने १५ से १७ नवंबर तक ज़ोन-४ए (उत्तरी कर्नाटक) के रायचूर, शोरापुर, सेदाम, हुमनाबाद, बिदर और गुलबर्गा का दौरा किया। भाई राजेश ६ अभ्यासियों के एक समूह के साथ इन केन्द्रों में गये, सत्संग कराया और अभ्यासियों को संबोधित किया।

१७ नवम्बर को गुलबर्गा आश्रम में एक पूर्ण-दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें गुलबर्गा और निकटवर्ती उपकेन्द्रों से २५० अभ्यासियों ने भाग लिया। तीन सत्संग कराये गये। भाई राजेश ने एक वार्ता दी जिसके पश्चात अभ्यासियों के साथ बातचीत का सत्र और एक प्रशिक्षक सभा आयोजित की गयी। सभी केन्द्रों के अभ्यासियों ने इस आयोजन में भाग लेने पर प्रसन्नता दिखायी। काफी अभ्यासियों ने वातावरण में गुरुदेव की उपस्थिति और उनके प्यार को महसूस किया।

येमिगनुर आश्रम का उद्घाटन, आन्ध्र प्रदेश

दिवाली के दिन ३ नवम्बर को पूज्य गुरुदेव ने येमिगनुर आश्रम का उद्घाटन किया। यह आश्रम आँध्र प्रदेश के कुरनूल जिले में स्थित है।

इस आश्रम का शिलान्यास २००७ में भाई अजय भट्टर ने किया था। आश्रम भूखण्ड २.५ एकड़ में फैला है जो कि ७ फुट ऊँची प्रांगण दीवार से घिरा है। इसमें एक ध्यान कक्ष है जिसमे ४०० अभ्यासी बैठ सकते हैं। इसमे एक रसोई व शौचालय ब्लॉक भी है। यह आश्रम अदोनी रोड पर स्थित है और यहाँ सड़क मार्ग और रेलवे स्टेशन से आसानी से पहुँचा जा सकता है। यह आश्रम अभ्यासी कालोनी के लिये ६ एकड़ भूमि से घिरा है। गुरुदेव इस निर्माण से काफी खुश थे और उन्होंने स्थानीय अभ्यासियों द्वारा किये गये कार्यों को सराहा।

श्रेत्रीय सभा, उत्तरी कर्नाटक

बसवकल्यान, बीदर, हमनाबाद, भालकी, थानाकुशनूर और गुलबर्गा के १४० अभ्यासियों ने बसवकल्यान के शिवयोगी कालेज में २७ अक्टूबर को एक श्रेत्रीय सभा में भाग लिया। इसका उद्देश्य स्थानीय अभ्यासियों को प्रोत्साहित करना और उन्हे मिशन का एक विस्तृत विवरण देना था। प्रात:काल सत्संग के बाद कुछ अभ्यासियों ने वार्ता दी। अभ्यासियों एवं बच्चों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। दोपहर में ३५ अभिलाषियों की उपस्थिति में एक खुले सत्र का आयोजन किया गया। दोपहर के भोजन के उपरान्त गुरुदेव के वीडियो दिखाये गये जिसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र में अभ्यासियों की सामान्य जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। कार्यक्रम बसवकल्यान के अभ्यासियों द्वारा आयोजित किया गया था और बहुत ही प्रभावशाली था।

बच्चों का कार्यक्रम, थुमकुन्टा, आन्ध्रप्रदेश

६ व २७ अक्टूबर को जोनल आश्रम में युवा अभ्यासियों के एक दल ने ४५ बच्चों के लिये पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया। ६ तारीख को केन्द्र प्रभारी ने जोर दिया कि आश्रम एक ऐसा स्थान है जहाँ बच्चे एक साथ भाईचारे के वातावरण में बढ़ते हैं। उन्होंने उनसे आश्रम के अनुशासन को ध्यान में रखते हुए आनन्द लेने की अनुरोध किया। बच्चों ने आश्रम में विभिन्न विभाग घूमें और स्वयंसेवकों से बातचीत की जिससे उनमें लगाव की भावना पैदा हुई। इसके बाद बच्चों द्वारा एक छोटा नाटक प्रस्तुत किया और खजाने की खोज खेल खेला गया।

२७ तारीख को पौधों के बारें में एक संक्षिप्त परिचय के बाद छोटे बच्चों को प्रेमपूर्वक पौधे लगाते हुए देखना एक सुखद दृश्य था। बच्चों ने ओमेगा में दी गयी मालिक की वार्ता को सुना और दोपहर के भोजन के लिये जाने से पहले गुब्बारा नृत्य का पूर्ण आनन्द लिया। उन्होने दिए सजाये जिन्हे बाद में दीवाली उपहार स्वरुप अभ्यासियों में बाँट दिया गया।

समझिये, अनुभव कीजिये और व्यक्त कीजिये

२४ नवम्बर को बनशंकरी आश्रम में आयोजित कार्यक्रम आध्यात्मिक पहलुओं पर अभ्यासियों की लेखन योग्यता को खोजने और प्रकट करने के लिये था। उन्हे दी गयी तालिका में से एक विषय चुनकर मिशन का साहित्य पढ़ने के बाद एक लेख लिखने के लिये कहा गया। लगभग १५ अभ्यासियों ने लगभग १०० अभ्यासियों जिन्होने प्रतिभागियों के प्रयासों को सराहा की उपस्थिति में अपने लेख प्रस्तुत किये। प्रतिभागियों ने बताया कि इससे उन्हें मिशन का साहित्य पढ़ने और गुरुदेव की याद में रहने में भी सहायता मिली।

युवाओं के कार्यक्रम

त्रिची, तमिलनाडु

१० व ११ नवम्बर के कार्यक्रम में उत्साही युवाओं को त्रिची आश्रम, घर जैसा लगा। प्रात: सत्संग के पश्चात भाई राजेश राठौर ने "आत्मा की यात्रा" नामक विषय पर एक प्रस्तुति दी। सहभगियों को एक प्रश्नपत्र दिया गया जो आत्मविश्लेषी एवं विचारोत्तेजक था। अन्य सत्रों में विडियो क्लिपिंग के माध्यम से एक स्पष्टीकरण सत्र, "अपने ह्रदय को सुनो" नामक विषय पर एक परस्पर वार्तालाप सत्र, मालिक, मिशन एवं पद्धति पर एक पहेली तथा "यूथ–ए टाइम आफ़ प्रॉमिस एंड फॉर एफ़र्ट' नामक पुस्तक पर एक प्रस्तुती, शामिल थे। कार्यक्रम का समापन सायं के सत्संग के साथ हुआ। सभी सहभागियों ने कृतज्ञता तथा एकता के गहन भाव को महसूस किया।

श्रीगंगानगर

एक दिन श्रीगंगानगर केन्द्र पर पन्द्रह अभ्यासियों ने युवा सत्र में भाग लिया। उन्होंने विचार शक्ति पर आधारित एक वृत्त–चित्र 'दि सिक्रेट देखी' जिससे उन्होंने यह जाना कि विचार शक्ति कैसे हमारे ऊपर कैसे कार्य करती है, इसका हमारे जीवन पर प्रभाव तथा किस तरह हम अपनी विचारधारा मे बदलाव लाकर अपने भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। इसलिये हमें विचार करना चाहिये कि हम क्या बनना चाहते हैं।

एक पहेली जिसमें विभिन्न विषयों के कागज के टुकडे बांटे गये और प्रत्येक अभ्यासी ने अपने अनुभव एवं ज्ञान के आधार पर विभिन्न विषयों पर अपने विभिन्न विचार प्रस्तुत किये। कई स्पष्टीकरण एवं नयी चीजें सामने आयीं जिससे हमारा ज्ञानवर्धन हुआ और अपनी दैनिक साधना मे सहायता मिली।

संबंधों पर सत्र, कोलकता

बहन स्नेहल देशपान्डे ने २४ नवम्बर को सहज मार्ग के प्रकाश में संबंधों पर बी एम ए कोलकाता मे दो घन्टे के एक सत्र को संचालित किया। उन्होनें संबंध, इसके महत्व, अधिक देकर संबंधों में मधुरता लाना तथा "दूसरों से जुड़ने" के भाव को विकसित करने के महत्व को परिभाषित किया। सत्र के दौरान सहभागियों ने सबसे सुखद पलों की तथा उन पलों की जो और बेहतर को सकते थे, सूची बनायी। तत्पश्चात प्रत्येक समूह को एक प्रकार के रिश्ते (संबन्ध) की विडियो दिखाई गयी और उनसे प्रत्येक संबंध के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष तथा महत्व के बारे में विचार–विमर्श करने को कहा गया। वीडियो में स्पष्ट प्रेम, अलगाव, निष्ठा, वफ़ादारी, विश्वनीयता, नम्रता, सम्बंधता, धैर्य, उदारता जैसी मुख्य विशेषतायें दर्शायी गयी। सत्र का समापन एच.ई.ए.आर.टी. [एच – हार्ट (ह्रदय), ई –ईनर्जी (ऊर्जा), ए–एमप्लिट्यूड (आयाम), आर–रेजोनेंस (प्रतिध्वनि), टी–टैस्ट (परीक्षा)] तथा पुस्तक हार्ट'स कोड (ह्रदय की भाषा) की संस्तुति के साथ हुआ। इस सत्र के माध्यम से सहभागियों को सफ़ल संबंधों के मुख्य अंशों को आत्मसात करने में सहायता मिली।

तिरुपुर के युवा अभ्यासियों की मणपाक्कम यात्रा

तिरुपुर केन्द्र के लगभग १८८ अभ्यासी १३ से १५ सितम्बर तक मणपाक्कम में रहे। वे आध्यात्मिक विकास और साधना जैसे सत्रों में सम्मिलित हुए तथा मणपाक्कम के वरिष्ठ अभ्यासियों के साथ प्रश्नोत्तर सत्रों में भाग लिया। उन्होनें आश्रम मे कुछ स्वयंसेवी कार्य भी किये। वे १४ तथा १५ सितम्बर को गुरुदेव से मिले और उनके साथ कुछ समय व्यतीत किया। सभी अभ्यासी बहुत ही उत्साहित तथा नयी उर्जा से परिपूर्ण दिखाई दे रहे थे।

झलकियाँ

पोल्लाची, तमिलनाडु

एक दिसंबर को भाई पी.वी.अरुणाचलम् और बहन सुमथी के द्वारा एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रातः चयन और चर्चा और दोपहर में प्रश्नोत्तरी इस कार्यक्रम में शामिल किए गए। इस कार्यक्रम ने अभ्यासियों के हृदयों में उमंग और दृढ़ संकल्प की एक शीतल लहर पैदा की कि वे अपनी साधना में सच्चे और नियमित बनें और आध्यात्मिक तौर पर विकसित हों।

दुर्ग, छत्तीसगढ़

२० अक्तूबर को ३२ अभ्यासियों ने दुर्ग में 'सफाई' पर एक जी.आई.टी.पी. सत्र में भाग लिया। उन्होंने महसूस किया कि सत्र के इस भाग ने उन्हें उन भटकावों को पहचानने में, जो कि उन के अभ्यास के दौरान आ चुके हैं , और हमारी पद्धति में निर्धारित सफ़ाई की प्रक्रिया के बारे में एक बेहतर समझ विकसित करने में मदद की।

जबलपुर, मध्यप्रदेश

सैनिक स्कूल और जय ज्योति स्कूल, रेवा में कक्षा छठी से बारहवीं के छात्रों, अध्यापकों, स्टाफ सदस्यों के लिए आत्म-विकास, आध्यात्मिकता और मूल्य आधारित शिक्षा पर एक वी.बी.एस.ई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपलब्धि और प्रोत्साहन, दृष्टिकोण, आध्यात्मिकता इत्यादि विषयों को शामिल किया गया और इसकी सराहना विद्यार्थियों और स्टाफ द्वारा की गई। कार्यक्रम के समायोजन पर पद्धति के विषय में बहुत सी पूछताछ की गई।

ठाणे, महाराष्ट्र

१६ नवंबर को २७ प्रतिभागियों के लिए हास्य क्लॅब, कोलशट रोड ठाणे में चार प्रशिक्षकों द्वारा हिन्दी में एक ओपन हाऊस आयोजित किया गया। फैसिलिटेटर्स ने व्याख्यान दिया कि एक ध्यान हमें वर्तमान क्षण में अतीत और भविष्य के बारे में चिंता किए बगैर जीना सिखाता है और वह हमें तनाव मुक्त रखता है। प्रशिक्षकों ने बताया कि उनकी सेवाएं उपलब्ध हैं, जब भी उन्हें सिटिंग की आवश्यकता हो।

कूर्ग के अभ्यासियों का मणपाक्कम दौरा

कूर्ग से ४५ से अधिक अभ्यासियों ने १९ से २३ नवंबर तक मणपाक्कम आश्रम का भ्रमण किया। मालिक यह जान कर खुश थे कि कूर्ग आश्रम विकसित हो रहा है। अभ्यासियों ने कूर्गी पेटा (पारम्परिक टोपी) पीचकाठी (कमरबंद-चाकू) सहित भेंट किया जो कि चाँदी का बना था जो सुनहरी धारी से जड़ा हुआ था।

तदोपरांत, मालिक ने सत्संग करवाया। यद्यपि यह केन्द्र २० वर्ष से भी पहले शुरु हुआ था, हाल ही में इसने गति प्राप्त करनी आरम्भ की है। अब मड़ीकेरी, कड़गुण्डा और विराजपेट में अभ्यासियों के घर पर तीन सत्संग केन्द्र स्थापित किए जा चुके हैं।

त्रिची, तमिलनाडु

"साहित्य से सीख" कार्यक्रम अभ्यासियों को मिशन का साहित्य पढ़ने के लिये प्रेरित करने के उद्देश्य से सितंबर २०१३ में शुरु किया गया। हर महीने के तीसरे रविवार को आयोजित होने वाले इस पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम के तहत अभ्यासियों में रुचि जागृत करना व कुछ नयापन लाना, जैसे कि प्रश्नोत्तरी व महीने की चयनित पुस्तकों में से मालिक के संदेश पढ़ना है।

अभी तक "सत्य का उदय", "मेरे गुरुदेव" और "मानव विकास में गुरु की भूमिका" जैसी कुछ पुस्तकें पढ़ी गयी हैं। इस कार्यक्रम ने बहुत से अभ्यासियों को मिशन का साहित्य पढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया है। इसका प्रमाण मिशन की पुस्तकों की बढ़ती हुई बिक्री से देखा जा सकता है।

इसने अभ्यासियों में एक खुली सोच जागृत कर उनके आध्यात्मिक उन्नति के दौरान होने वाले अनुभवों को बांटना सिखाया है। उनकी मिशन के साहित्य के प्रति समझ में बहुआयामी वृद्धि हुई है।

आध्यात्मिकता की ओर अधिक ध्यान देना, सामूहिक सहयोग व भाई–चारे की भावना इस कार्यक्रम का परिणाम है।

चिकमंगलूर, दक्षिण कर्नाटक

अक्टूबर २४ से २६ तक भाई मोहनदास हेगड़े ने चिकमंगलूर के ए.आई.टी कॉलेज, बी.एस.एन.एल. आफिस, यूरेका एकेडमी, एम.इ.एस. कालेज व टी. एम. एस. कालेज में श्रृंखलाबद्ध खुले सत्र आयोजित किये। इन सत्रों का मुख्य विषय "आध्यात्मिकता की जरुरत व तनावमुक्त जीवन के लिये ध्यान का महत्व" था। २६ तारीख को उन्होंने गृहसभाएं आयोजित कीं, जिसमे चिकमंगलूर केन्द्र के और अधिक विकास संबंधित बातों पर विचार हुआ। २७ तारीख को लायन भवन में कांडूर व हरिहरापूरा के अभ्यासीगण एक अर्धदिवसीय कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। इस दौरान भाई हेगड़े ने संतुलित जीवन को मालिक के जीवन से उदाहरण देकर समझाया।

इसके उपरांत एक समूह चर्चा आयोजित हुई जिसमें अभ्यास के दौरान आने वाली बाधाओं पर कैसे काबू पाया जाए, पर चर्चाएं हुई। भाई रमाकांत ने अभ्यासी बनने के बाद अपने अनुभवों को सुनाया। सभी प्रतिभागियों ने इस सत्र को पसंद किया और आशा की कि ऐसे सत्र और ज्यादा आयोजित हों।

नये प्रकाशन

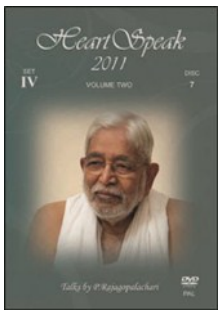

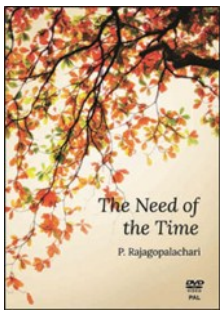

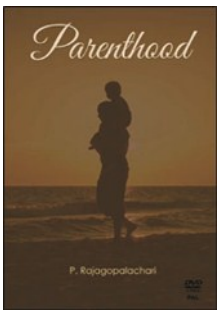

डी.वी.डी.

१. हार्ट स्पीक २०११, भाग २ (अंग्रेजी)
२. द नीड आफ द टाईम (अंग्रेजी)
३. पेरेन्टहुड (अंग्रेजी)

पुस्तकें

सहज मार्ग के सिद्धान्त
भाग १३
(तमिल)

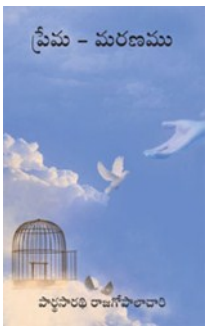

प्यार और मृत्यु
(तेलगू)

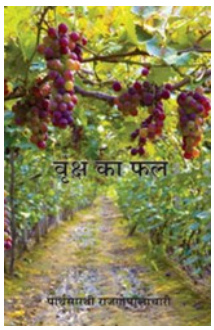

वृक्ष का फल
(हिन्दी)

अभ्यासी डायरी
(हिन्दी)

मकड़ी का जाल– भाग १
(मलयालम)

योगाश्रम, सिलिगुड़ी, पश्चिम बंगाल

प्रकाश का केन्द्र

"स्मरण रहे कि प्रकृति के समस्त संसाधन चाहे वह स्वास्थ्य हो, धन संपदा हो, चाहे वह प्रतिष्ठा हो या समृद्धि हो; प्रत्येक चीज वापस प्राप्त की जा सकती है, परन्तु समय नहीं। बीता हुआ समय कभी भी वापस नहीं लाया जा सकता है।"

पार्थसारथी राजगोपालाचारी, ११ जुलाई २०१०, सिलिगुड़ी

सिलिगुड़ी एक छोटा शहर है जो पश्चिमी बंगाल के उत्तरी भाग में हिमालय की तलहटी पर स्थित है। अपनी विशेष स्थिति (जगह) के कारण यह उत्तर–पूर्व का द्वार है तथा नेपाल, बंगलादेश और भूटान देशों के साथ अपनी सीमायें जोड़ता है। ४.८३ एकड़ भूभाग में फैला आश्रम चोबाभिटा नामक ग्राम में स्थित है जिसकी दूरी मुख्य शहर से लगभग १२ किलोमीटर, रेलवे स्टेशन से ८ किलोमीटर तथा हवाई अड्डे से लगभग २५ किलोमीटर है। यह आश्रम नैसर्गिक सौन्दर्य से भरपूर है क्योंकि यहाँ से कोई भी हिमाच्छादित कंचनजंघा पर्वत शिखर को देख सकता है।

गुरुदेव ने गंगटोक जाते हुए २ नवम्बर २००९ को ये आश्रम की भूमि पंजीकृत कराई। अपनी वापसी में गुरुदेव ने आश्रम का निर्माण कार्य प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की। आश्रम का कार्य लगभग ८ माह में पूरा हुआ। इस में मास्टर्स काटेज, लगभग ३००० वर्गफ़ुट क्षेत्र का ध्यान कक्ष, एक डोरमेटरी जिसमें करीब ३०० अभ्यासी आराम से रह सकते हैं, रसोई घर सहित भोजन करने का स्थान जिसमें २५० अभ्यासी एक बार में खाना खा सकते हैं तथा एक प्रसाधन खण्ड है। आश्रम में सड़कें बन गयी हैं तथा बहुत से पेड़ भी लगाये गये हैं।

गुरुदेव ने ११ जुलाई २०१० को उत्तरपूर्व तथा नेपाल के सभी भागों से आये करीब ६०० अभ्यासियों की उपस्थिति में इस आश्रम का उद्घाटन किया। सत्संग के पश्चात गुरुदेव ने एक वार्ता दी। उन्होंने इस क्षेत्र में मिशन के विस्तार के लिये आश्रम के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि आश्रम में प्रत्येक वर्ष, विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों के अभ्यासियों के लिये, दो या तीन क्षेत्रीय समारोह आयोजित किये जायें। इन समारोह के दौरान अभ्यासियों के रहने व भोजन की व्यवस्था पर आने वाला व्यय सहज मार्ग स्पिरिचुअलिटी फ़ाउन्डेशन वहन करेगा। इस आश्रम के उद्घाटन के बाद से ही प्रतिवर्ष यहाँ पर सिलिगुड़ी तथा निकट के केन्द्रों के अभ्यासियों के लिये हमारे गुरुदेवों के जन्म दिन पर समारोह मनाये जाते हैं।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2013 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. “Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", “SRCM”, “Constant Remembrance” and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.